न्यारापन १

१

सफलता का आधार – न्यारापन सभी सदा अपने विश्व-कल्याणकारी स्टेज पर स्थित होकर सेवा के पार्ट में आते हो। विश्व-कल्याणकारी अर्थात बेहद के सेवाधारी, किसी भी प्रकार की हद में नहीं आ सकते। विश्व बेहद है तो विश्व-सेवाधारी अर्थात् बेहद की स्थित में रहने वाले। विश्व-कल्याणकारी सदा सेवा करते हुए भी न्यारे और सदा बाप के प्यारे होंगे। सेवा के भी लगाव से न्यारे। सेवा का लगाव भी सोने की जंजीर है। यह भी बन्धन बेहद से हद में ले आता है। इसलिए सदा सेवा में न्यारे और बाप के प्यारे बनकर चलो। ऐसी स्थिति में रहने वाले सदा सफलतामूर्त रहेंगे। सफलता का सहज साधन है – न्यारा और प्यारा बनना। कही भी सफलता की कमी है तो इसका कारण न्यारे बनने की कमी है। न्यारा अर्थात देह के

स्मृति से भी न्यारा, ईश्वरीय सम्बन्ध के लगाव से भी न्यारा और ईश्वरीय सेवा के साधनों के लगाव से भी न्यारा। जब ऐसा न्यारापन कम होता है तो तब सफलता की कमी होती है। तो सदा सफलता मूर्त – ऐसे समझते हो? या अपने को छोटा समझते हो? जब कोई भी डायरेक्शन मिलता है तो उस डायरेक्शन को प्रैक्टिकल में लाने के समय छोटा समझना ठीक है और सेवा करने में बड़ा होकर सेवा करो। डायरेक्शन के समय छोटा समझेंगे तो सदा सफल रहेंगे। बड़ा अर्थात बेहद की वृत्ति वाला।

२

ऊंचे-ते-ऊंचे बाप के साथ और फिर उसमें भी विशेषता यह है कि एक कल्प के लिए नहीं, अनेक कल्प यह पार्ट बजाया है और सदा बजाते ही रहेंगे। बदली नहीं हो सकता। ऐसे नशे में रहो तो सदा निर्विघ्न रहेंगे। कोई विघ्न तो नहीं आता है ना? वायुमण्डल का, वायब्रेशन का, संग का कोई विघ्न तो नहीं है?

कमलपुष्प के समान हो ? कमलपुष्प समान न्यारा और प्यारा। बाप का कितना प्यारा बना हूँ, उसका हिसाब न्यारेपन से लगा सकते हो। अगर थोड़ा-सा न्यारा है, बाकी फंस जाते हैं तो प्यारे भी इतने होंगे। जो सदा बाप के प्यारे हैं उनकी निशानी है – स्वत: याद।

३

माया के वार से बचने का साधन है – विश्व से न्यारा और बाप का प्यारा बनो :- हरेक अपने को बाप के प्यारे और विश्व में प्यारे समझते हो ? जो बाप के प्यारे बनते हैं यह विश्व से न्यारे बन जाते हैं। तो जितना न्यारापन होगा उतना ही प्यारा होगा – अगर न्यारा नहीं तो प्यारा भी नहीं। जो बाप के प्यार में लवलीन रहते हैं, खोये हुए होते हैं उन्हें माया आकर्षित कर नहीं सकती। जैसे वाटरप्रूफ कपड़ा होता है तो एक बूँद भी टिकती नहीं, ऐसे जो लगन में रहते, लवलीन रहते वह मायाप्रूफ बन जाते हैं। माया का कोई वार-वार नहीं कर सकता। बाप

का प्यार अविनाशी और निस्वार्थ है, इसके भी अनुभवी हो और अल्पकाल के प्यार के भी अनुभवी हो। वह प्यार इस प्यार के आगे कुछ भी नहीं है। बाप और मैं तीसरा न कोई, ऐसी स्थिति रहती है। तीसरी बीच में आना अर्थात् बाप से अलग करना। तीसरा आता ही नहीं तो अलग हो नहीं सकते। जो सदा बाप की याद में लवलीन रहते वह सिद्धि का पा लेते हैं।

४

सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो, हर कर्म करते हो? जो साक्षी हो कर्म करते हैं उन्हें स्वत: ही बाप के साथीपन का अनुभव भी होता है। साक्षी नहीं तो बाप भी साथी नहीं इसलिए सदा साक्षी अवस्था में स्थित रहो। देह से भी साक्षी। जब देह के सम्बन्ध और देह के साक्षी बन जाते हो तो स्वत: ही इस पुरानी दुनिया से साक्षी हो जाते हो। देखते हुए, सम्पर्क में आते हुए सदा न्यारे और प्यारे। यही स्टेज सहज योगी का अनुभव कराती है। तो सदा साक्षी इसको कहते हैं – साथ में रहते हुए

भी निर्लेप। आत्मा निर्लेप नही है लेकिन आत्मअभिमानी स्टेज निर्लेप है अर्थात माया के लेप व आकर्षण से परे है। न्यारा अर्थात निर्लेप। तो सदा ऐसी अवस्था में स्थित रहते हो? किसी भी प्रकार की माया का वार न हो। बाप पर बलिहार जाने वाले माया के वार से सदा बचे रहेंगे। बलिहार वालों पर वार नहीं हो सकता। तो ऐसे हो ना? जैसे फर्स्ट चांस मिला है वैसे ही बलिहार और माया के बार से परे रहने में भी फर्स्ट। फर्स्ट का अर्थ ही है फास्ट जाना। तो इस स्थिति में सदा फर्स्ट। सदा खुश रहो, सदा खुश नशीब रहो।

५

एवररेडी का अर्थ ही है–नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप। या उस समय याद आयेगा कि पता नहीं बच्चे क्या कर रहे होंगे, कहाँ होंगे, छोटे-छोटे पोत्रों का क्या होगा? यहीं विनाश हो जाये तो याद आयेंगे? पति का भी कल्याण हो जाये, पोत्रे का भी कल्याण हो जाये, उन्हों को भी यहाँ ले आयें–याद आयेगा?

बिजनेस का क्या होगा, पैसे कहाँ जायेंगे? रास्ते टूट जायें फिर क्या करेंगे? देखना, अचानक पेपर होगा। सदा न्यारा और प्यारा रहना–यही बाप समान बनना है। जहाँ हैं, जैसे हैं लेकिन न्यारे हैं। यह न्यारापन बाप के प्यार का अनुभव कराता है। जरा भी अपने में या और किसी में भी लगाव न्यारा बनने नहीं देगा। न्यारे और प्यारेपन का अभ्यास नम्बर आगे बढ़ा- येगा। इसका सहज पुरुषार्थ है निमित्त भाव। निमित्त समझने से निमित्त बनाने वाला याद आता है। मेरा परिवार है, मेरा काम है। नहीं, मैं निमित्त हूँ। निमित्त समझने से पेपर में पास हो जायेंगे।

६

जो नेचुरल चीज होती है वह सदा होती है और जो अननेचुरल (ळहर्हूेर्ल्त;अस्वाभाविक) होती है वह कभी-कभी होती है। तो यह स्मृति सदा रहनी चाहिये कि हम डबल हीरो हैं। इस नशे में नुकसान नहीं है, दूसरे नशे में नुकसान है। यह हद का नशा नहीं है, बेहद का रूहानी नशा है। उस नशे में भी

सब बातें स्वत: ही भूल जाती हैं, भूलनी नहीं पड़ती हैं। यह रूहानी नशा जब होता है तो हद की बातें भूल जाती हैं, भूलने की मेहनत नहीं करनी पड़ती है। जब यह स्मृति रहती है कि मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ–तो स्वत: ही हर कर्म श्रेष्ठ होता है। हर कर्म से सभी को अनुभव होगा कि यह कोई विशेष आत्मा है, साधारण नहीं। ऐसे समझते हो? वा जैसे सब हैं वैसे हम हैं? न्यारे लगते हो? चाहे कितने भी अज्ञानी हों लेकिन अनेक अज्ञानियों के बीच आप 'ज्ञानी आत्मा' प्यारी अनुभव हो। इसको कहा जाता है हीरो पार्टधारी। ऐसे है? दूसरे भी अनुभव करें। ऐसे नहीं–सिर्फ अपने को समझें। अन्दर से समझें कि ये न्यारे हैं। न चाहते हुए भी सभी आपके आगे अपना सिर झुकायेंगे। अभिमान का सिर झुकेगा। परन्तु इतनी पक्की अवस्था चाहिए। चेक करो और चेंज करो। हर कर्म में अपने को चेक करो कि–न्यारी हूँ, प्यारी हूँ? डबल हीरो स्थिति का अनुभव बढ़ाते चलो। एक-दो से आगे बढ़ना है और एक-दो को आगे बढ़ाना है। ऐसे नहीं समझो कि दूसरा आगे जायेगा तो

मैं पीछे हो जाऊंगा। नहीं, बढ़ाना ही बढ़ना है। ब्राह्मण जीवन अर्थात् बढ़ना और बढ़ाना।